मनीषकुमार शर्मा 'समित'

ई—मेल-manish_samit@hotmail.com

अभिलाषा

उपस्थित प्रत्येक प्रयत्नकर्ता के प्रश्नों का उत्तर दिया गया। सभी लोग उनके कार्य तथा प्रत्येक क्षेत्र के पेंचीदा प्रश्नों के सही उत्तरों के प्रति नतमस्तक हो रहे थे। इस सफलता से आविष्कारक का पैर जमीन पर नहीं था।

"इसका दिमाग आइंस्टीन से भी ज्यादा तीखा है।" विज्ञान में रुचि रखने वाला एक व्यक्ति बोला।

"नहीं, यह अष्टावक्र से भी अधिक विद्वान है।" एक संत पुरुष बोले।

"क्यों नहीं, यह कृत्रिम बुद्धि वाला एक अत्याधुनिक कृत्रिम मानव है।" आविष्कारक ने उमंगता से साथ कहा।

एक लड़का, जो भीड़ के कोने में बैठ उत्सुकता से देख रहा था, आगे बढ़ा और आविष्कारक से पूछा—"अंकल, क्या वह सभी प्रश्नों का उत्तर देता है?"

"हाँ, बिल्कुल, तुम ने देखा नहीं उसने कितनी आसानी से जवाब दे दिया है।" आविष्कारक ने मुस्कुराते हुए कहा।

लड़का उत्साहपूर्वक कृत्रिम मानव की ओर मुड़ा और पूछा, "मेरी माँ, जो भगवान के घर गयी है, कब लौटेगी?"

हिन्दी अनुवाद : लेखक द्वारा स्वयं

भक्तपुर, नेपाल निवासी मनीष कुमार शर्मा 'समित' कम समय में ही स्वयं को लघुकथा एवं समीक्षा के क्षेत्र में खुद को स्थापित करने में सफल रहे हैं। अब तक उनके तीन लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत लघुकथा उनके नवीनतम लघुकथा संग्रह 'अर्धशताब्दी' से ली गयी है।